लेखक की पुस्तक
''दूर करें दुर्भाग्य''
का मूल सार संक्षेप

गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
अ.प्र. राजपत्रित अधिकारी
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स
रूड़की-247667 (उत्तराखण्ड)
मोबाइल सं. 09760111555
Web. www.astrotantra4u.com

क्या है दुर्भाग्य

दुर्भाग्य, कितना सीधा-सरल सा शब्द! कोई भी इस शब्द की तार्किक व्याख्या कर सकता है। इस पर लिखना तो और भी सरल लगेगा, क्योंकि आए दिन व्यवहार में सुनाई देने वाला यह शब्द लगभग प्रत्येक व्यक्ति के पीछे छलावे सा लगा हुआ है। आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाला कोई बिरला ही सम्भवतः दुर्भाग्य के कुचक्र से बचा हो। इस विषय पर लिखने को जब मैंने लेखनी चलाई तो पता चला कि नित्य व्यवहार में आने वाला यह शब्द वास्तव में कितना जटिल है और इसकी व्याख्या करना कितना कठिन है।

एक दिन एक सर्वसम्पन्न परिचित के मुँह से दुर्भाग्य शब्द सुनकर अपनी एक पुस्तक लिखने की प्रेरणा मुझे मिल गयी। लेख उसी पुस्तक 'दूर करें दुर्भाग्य' का सार-संक्षेप है। उस दिन देर रात तक उस व्यक्ति के सम्बन्ध में सोचता रहा कि जीवन में उस व्यक्ति

को किस बात की कमी है। धन-सम्पदा, वैभव-ऐश्वर्य, सुन्दर, सुशील और भाग्यवान पत्नी, आज्ञाकारी, तेजस्वी, होनहार और स्वस्थ मानसिकता वाले बच्चे, घर का स्वस्थ, प्रसन्नचित्त और शान्त वातावरण। सब कुछ तो उपलब्ध है उनकी दुनियाँ में। वह आर्थिक रूप से इतने सम्पन्न हैं कि सारा परिवार भी यदि हाथ पर हाथ रखकर खाता पीता रहे तो उनकी दो तीन पीढ़ियों में कहीं कमी नहीं आएगी। फिर उन सज्जन के मुँह पर दुर्भाग्य शब्द क्यों आया?

वास्तव में बात यह थी कि उनकी किसी पुश्तैनी छोटी सी जमीन का सौदा हुआ था और उसके उन्हें पचास लाख रूपए मिले थे। उन्हें इस बात का पछतावा हो रहा था कि दो माह पहले न बेचकर यदि उस छोटे से टुकड़े को उन्होंने आज बेचा होता तो उसके उन्हें कम से कम तीन गुना रूपए अधिक मिले होते। बाप-दादाओं से मुफ्त में मिली जमीन पचास लाख रूपए में बेचकर भी वह माथा पकड़कर मेरे सामने अपने दुर्भाग्य को रो रहे थे।

क्या यह सब उनका दुर्भाग्य था? वास्तव में दुर्भाग्य किसको माना जाए? दो माह पूर्व जो उनका सौभाग्य था, आज उनके लिए दुर्भाग्य बन गया। इसका ठीक उल्टा जमीन खरीदने वाले के लिए हुआ, क्योंकि आज वह सौभाग्यशाली हो गया। दो माह पूर्व मंहगे खरीदने के लिए वह रो रहा था। उसने कल्पना भी नहीं की थी कि अल्प समय में ही भाव इतना बढ़ जायेगा।

किसी का दुर्भाग्य अन्य के लिए सौभाग्य का कारण होता है। इसके विपरीत किसी के लिए वह दुर्भाग्य भी बन सकता है। भीषण गर्मी के बाद बरसने वाली वर्षा का जल एक किसान के लिए सौभाग्यशाली होता है, वही वर्षा कुम्हार के लिए दुर्भाग्य का भी

कारण हो सकती है। शब्द एक ही है, परन्तु एक कारण से और एक ही समय में उसके प्रभाव भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। एक धनाढ्य व्यक्ति बहुत सौभाग्यशाली है। परन्तु उसका समस्त धन रेगिस्तान में उसको प्यास से तड़पकर मरते समय एक घूँट पानी तक नहीं दिलवा सकता। वहाँ एक फक्कड़, निर्धन बंजारा अधिक धनाढ्य है, अधिक सौभाग्यशाली है, क्योंकि उसके पास पीने के लिए पर्याप्त पानी है।

धनाढ्य-दरिद्र, स्त्री-पुरुष, अभिनेता-राजनेता, आस्तिक-नास्तिक, शान्तिवादी-आतंकवादी, बौद्धिक-निर्बुद्ध आदि अनेक व्यक्तियों से अलग-अलग अनेक बार चर्चा करके इस विषय में मैं कुछ निष्कर्ष निकाल पाया हूँ। दुर्भाग्य शब्द को कुछ शब्दों और परिभाषाओं से स्पष्ट करने का प्रयास ही लेख का मूल विषय है। पाठकगण पढ़कर स्वयं मनन करें:

"संसार में किसी के लिए प्रतिकूल स्थिति का सामना करना उसके लिए दुर्भाग्य है।"
"विपरीत प्रारब्ध का होना दुर्भाग्य है।"
"महत्वाकांक्षाओं का अधूरा रहना अथवा पूर्ण न होना दुर्भाग्य है।"
"मनुष्यों द्वारा किये अशुभ कर्मों का फल भोगना दुर्भाग्य है।"
"विषम परिस्थितियाँ दुर्भाग्य को जन्म देती हैं।"
"विषय-वासनाओं की पूर्ति होते चले जाना ही दुर्भाग्य का मूल कारण है।"
"आज का अविवेकी कार्य, कल का दुर्भाग्य है।"
"उत्तरोत्तर सुख प्राप्ति की हवस ही दुर्भाग्य का कारण बनती जाती है।"
"दुःख दरअसल सुख का घट जाना है और यहाँ से ही दुर्भाग्य प्रारम्भ होता है।"
"जीवन की सीमितताओं से निकले नहीं कि समझिए दुर्भाग्य को निमन्त्रण दे दिया।"

''मिथ्या ज्ञान ही दुर्भाग्य है।'' मेरे एक कट्टर आर्य समाजी मित्र का कथन है।

''भौतिक सुखों में कमी होना दुर्भाग्य है।''

''विषय-भोग और इन्द्रियों की अनुकूलता ही अन्ततः दुर्भाग्य का कारण बनती है।''

''धन की हानि दुर्भाग्य है।''

''स्वास्थ्य की हानि दुर्भाग्य है।''

''रोटी, कपड़ा और मकान का न मिलना दुर्भाग्य है।''

''भाग्यहीन होना दुर्भाग्य है।''

''बच्चों पर पढ़ाई का भार दुर्भाग्य है।''

''अधिक न पढ़ना दुर्भाग्य है।''

''अधिक पढ़कर बीमार हो जाना तदनुसार फेल हो जाना दुर्भाग्य है।''

''बच्चों पर पढ़ाई का भार दुर्भाग्य है।''

''स्वार्थ अथवा परमार्थ सिद्धि की अप्राप्ति ही दुर्भाग्य है।''

''एक विशिष्ट समय में मनुष्य की सत्कर्म अथवा दुष्कर्म में होने वाली असफलता उसका दुर्भाग्य है।'' यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है।

''स्वास्थ्य वैभव तथा बौद्धिकता से रहित व्यक्ति दुर्भाग्यशाली है।''

अविष्कारों के कारण अनेक कठिनाईयाँ आज सरल बन गयी हैं। दूरियाँ सिमटकर छोटी हुई हैं। असाध्य रोगों की चिकित्सा सम्भव कर दी गयी है। अनेक असम्भव सी लगने वाली ऐसी बातों को सम्भव बना दिया गया है, जिनकी कभी कल्पना भी नहीं की जाती थी। यहाँ तक कि आज विज्ञान ने मृत्यु की परिभाषा ही बदल दी है। प्रत्येक व्यक्ति इस बात को स्वीकार करेगा कि जीवन में विविधताएं और सुख सुविधाएं निरन्तर बढ़ रही है। आज की यह उपलब्धियाँ ही हमारे दुर्भाग्य का कारण बन रही हैं।

धार्मिक प्रवचन सुनते समय, श्मशान में अपने प्रियजन की चिता जलाते समय, असाध्य रोगग्रस्त किसी असहाय रोगी से मिलते समय अथवा क्रोध और कोई जघन्य पाप कर चुकने के बाद अथवा किन्हीं कारणों से उत्पन्न पश्चातापवश जैसी भावना बनती है, यदि वह जीवन में उतरकर स्थाई हो जाए तो दुर्भाग्य पैदा करने वाले कारण ही उत्पन्न नहीं होंगे। लेकिन अधिकांशतः होता यही है कि हम इन विभिन्न विपरीत स्थितियों में उत्पन्न बुद्धि भावना को घटना-क्रम समाप्त हो जाने के बाद एक झटके से बदलकर पुनः भौतिक वातावरण में रंग जाते हैं। साधारण भाषा में कहें कि हमारी वही घिसी-पिटी दुनियादारी की बातें पुनः चालू हो जाती हैं। बस यही हमारें दुर्भाग्य का कारण हैं।

जहाँ कहीं भी चिन्ता, भय, कष्ट, आशंका, दुःख, निरुत्साह, क्षोभ, रोगादि का प्रादुर्भाव होता है, वहाँ समझिए विश्वास का सर्वथा अभाव होना प्रारम्भ हो जाता है और यहाँ से ही दुर्भाग्य साथ पकड़ लेता है। विपरीत परिस्थिति, शान्ति और शक्ति के साथ चित्त को एकाग्र करके ही दुर्भाग्य को जीता जा सकता है।

देखा जाए तो इच्छाएं ही दुर्भाग्य की जननी हैं। यदि इच्छाओं के पीछे न भागकर प्रारम्भ में ही उनका दमन कर दिया जाए तो सौभाग्य की प्राप्ति हो सकती है। यह सब केवल आत्मसंयम से सम्भव है। आत्मसंयम धन-रत्नों से कहीं अधिक मूल्यवान है। इसका कोई मोल नहीं है। इस बिना पैसे के क्रय की हुइ वस्तु में ही हमारा कल्याण है। क्रोधाग्नि से भी सौभाग्य का धीरे-धीरे पलायन प्रारम्भ हो जाता है। इस पर भी आत्मसंयम से अधिकार जमाया जा सकता है। इससे जब तक नहीं उबरा जा सकता जब तक मनसा, वाचा और कर्मणा हम असत्य के कुमार्ग पर चलना छोड़ नहीं देते।

एक बहुत ही सामान्य सा प्रश्न है। जिज्ञासु प्रायः मुझसे पूछते हैं कि जब भाग्य में दुर्भाग्य तय है तो फिर सौभाग्य कैसे मिल जायेगा? कर्म से दुर्भाग्य को बदला जा सकता है। यह अकाट्य सत्य है कि भाग्य की एक अधिकतम सीमा प्रारब्ध में निर्धारित है। उस सीमा को लांघने में व्यक्ति के क्रियमाण कर्म उपयोगी सिद्ध होते हैं। प्रारब्ध में यदि बीमारी लिखी है तो दवा से कभी कोई रोगी ठीक नहीं होता। पढ़ाई में कमजोर बच्चे को एक योग्य पढ़ाने वाले अध्यापक से विद्या अर्जित करने में कभी भी सफलता नहीं मिलती। फल के किसी बीज में पौधा बनना, पेड़ आदि में विकसित होकर फल आदि देने का सारा कार्यक्रम विधि ने पूर्व में ही निर्धारित कर दिया है। इस छिपे हुए कार्यक्रम का किसी को पूर्वानुमान नहीं है। वह बीज सड़ सकता है और फल-फूलकर एक सघन वृक्ष बन सकता है। यह सब निर्भर करेगा उस माली पर जो उसके लिए सेवा कार्य कर रहा है। यदि वह किसी अनाड़ी माली के हाथ लगा तो अर्धविकसित रह जायेगा अथवा सड़ गल जाएगा। इसी पौधे को कोई योग्य माली पर्याप्त खाद, पानी और अपना उचित श्रम लगाकर अधिक विकसित भी कर सकता है। व्यक्ति के प्रारब्ध को कोई माली रुपी योग्य तथा निःस्वार्थ भाव से कर्म करने वाला गुरू, ज्योतिष आदि उसका प्रयोग प्रभावित करके सौभाग्य के चरम बिन्दु तक पहुँचा सकता है। यह दवा की तरह ही उसका क्रियमाण कर्म है।

भाग्य ने मेरे साथ छल किया। मेरे तो कर्म ही फूट गए। सब कुछ मेरे दुर्भाग्य के कारण हो रहा है आदि नकारात्मक बुद्धि वाली बातों से तो जीवन गर्त में ही जाएगा। हमने जीवन जीने के लिए टेढ़े-मेढ़े अथवा कहें कि गर्त में जाने वाले मार्ग को अंगीकार कर

लिया । अपने इस कुमार्ग को चुनकर हमने दुर्भाग्य पैदा कर लिया है। अपने इस कुमार्ग को चुनकर हम दुर्भाग्य को रो रहे हैं, बस यही तो हमारा सबसे बडा दुर्भाग्य है।

गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
(राजपत्रित अधिकारी) अ.प्रा.
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स
रूड़की 247667 (उ.ख.)
मोः 09760111555
website : www.astrotantra4u.com
E-mail:gopalraju12@yahoo.com

समझें अपने दुर्भाग्य को
सरल नहीं है दुर्भाग्य की व्याख्या
क्या है हमारा दुर्भाग्य
किसी का दुर्भाग्य किसी का भाग्य